बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)
Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह
(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 161 /2026) Year: 8th

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 01.09.2026

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	□मृदा नमी संरक्षण तथा खरपतवार नियंत्रण की दृष्टि से समस्त फसलों की बुआई मेड़ी पर या उठी हुई क्यारियों में पलवार का प्रयोग करके ही करें। लोबियाए भिंडीए बैंगनए टमाटरए मिर्च तथा कद्दू वर्गीय फसलों में काली पॉलीथिन अथवा सूखी घास की पलवार प्रयोग करें। कद्दू वर्गीय सब्जियों में तारए झाड़ी अथवा पंडाल बनाकर लताओं को ऊपर चढ़ाने की व्यवस्था कर दें। □खड़ी फसलों में समुचित ढंग से खरपतवार नियंत्रण करेंए ताकि कीड़ों एवं रोगों का प्रकोप कम हो। खेत से जलनिकासी का समुचित प्रबंध करें। □फसलों को थ्रिप्स तथा सफेद मक्खी जैसे चूसक कीड़ों के प्रकोप से सुरक्षित रखने के लिए यथावश्यक उपयुक्त कीटनाशी का प्रयोग करें। □वर्षा ऋतु हेतु टमाटरए बैंगन तथा मिर्च की तैयार पौध की रोपाई कर दें और खरीफ प्याज की पौधशाला तैयार कर लें। सीधी बोई जाने वाली फसलों की भी उपरोक्त सुझावों के अनुसार बुआई कर दें। बुआई से पहले प्रति किलो बीज में 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा कैप्टन मिलाकर बीजोपचार करें तथा सिंचाई के जल में प्रति लीटर 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम घोलकर ड्रेंचिंगधसिंचाई करें।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	**शस्य-प्रबंधन** ➢ इस मौसम की फसलों में खरपतवार की समस्या अधिक होती है। समय समय पर निराई गुड़ाई करते रहने से इस पर नियंत्रण रखा जा सकता है । ➢ इस समय कृषित एवं आकृषित भूमि पर, घरों के आस पास, सड़क के किनारे आदि जगहों पर गाजर की तरह पत्ती वाला सफ़ेद फुलयुक्त पौधा बहुतायत में पाया जाता है। ➢ इस पौधे को गाजरघास य पार्थेनियम कहा जाता है। यह एक सामाजिक समस्या है और इसका निवारण सामाजिक सहयोग से ही हो सकता है। ➢ गाजरघास मानव, फसल एवं पशु स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इस पौधे को जड़ सहित उखाड़ फेंकना चाहिए इसे उखारते समय इसके सीधे संपर्क में आने से बचना चाहिए। ➢ इसके रोकथाम के लिए ग्लाय्फोसेट नामक रासायनिक खरपतवारनाशी की १०० मिली मात्रा प्रति टैंक (१५ ली ०) पानी की दर से मौसम साफ़ रहने पर छिड्काव करें।

		➢ धान की फसल में कल्ले बनने की अवस्था अत्यंत संवेदनशील होती है इस अवस्था में समुचित जल प्रबंधन अति आवश्यक होता है जल की ५ से ८ सेमी गहराइ हमेशा बनाये रखना चाहिऐं। ➢ ४० से ५० किग्रा यूरिया प्रति एकड़ की दर से कल्ले बनने की अवस्था पर प्रयोग करना चाहिऐं। ➢ पोटाश की कमी के लक्षण दिखने पर १०-१५ किग्रा एम्० ओ० पि० प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करेंं। ➢ ०.५ प्रतिशत पोटाश के घोल का छिड़काव भी धान की फसल के लिए लाभदायक होता हैं। ➢ धान की सीधी बुवाई में 40 से 50 किग्रा/एकड़ की दर से यूरिया कल्ले फूटने के समय (बुवाई के 35–40 दिन बाद) डालें। ➢ बुवाई के 55–60 दिन बाद 40–50 किग्रा0/एकड़ की दर से यूरिया डालें। **मृदा-प्रबंधन** खरीफ में बोई गई दलहन, तिलहन एवं धान्य फसलों में अगर अभी तक बची हुई नत्रजन उर्वरकों की मात्रा का प्रयोग नही किया है तो अविलम्ब करके खत्म करें। □ वर्षा के दौरान होने वाले मृदा क्षरण एवं मृदा कटाव को रोकने हेतु अपने – अपने खेतो का मेड बंधान लगातार करतें रहें। □ बागवानी फसलों में पौधे की उम्र एवं आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। सामान्यतः प्रति पौधा प्रति वर्ष उम्र के अनुसार 100 ग्राम पोषक तत्वो का प्रयोग करना चाहिए। □ वर्षा के दौरान जिन भी किसान भाईयों के फसल वाले खेतों में पानी भर गया है उसका अविलम्ब निकासी करने का प्रयत्न करें। □ जो सब्जी फसलें अभी खेतों में है उनमें आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	□ पशुपालक पशुओं को छायादार, हवादार व ऊँचे स्थानों पर ही बांधें जहाँ पानी न भरे साथ ही नमी की शिकायत न आये। □ नमी वाले स्थानों में पशुओं में त्वचा सम्बन्धी रोगों (Fungal Infection) का खतरा रहता है। वर्षा ऋतू में कृमि का प्रकोप भी बहुतायत में देखा गया है। □ गीले स्थानों में यदि पशु बांधे जाते हैं तो वहां दुधारू पशुओं को थनैला रोग की सम्भावना बनी रहती है क्यूंकि थनेला रोग को फैलाने वाले जीवाणु गीले तथा गंदे स्थानों पर अधिक सक्रिय होते हैं। □ वर्षा ऋतू में अक्सर पशुपालक हरी घास या चारे पर ही पशु को पूर्णतः निर्भर कर देते हैं जो कि पशुओं के पाचन को प्रभावित करता है अतः वर्षा ऋतू में पशुओं को हरे चारे को सूखे भूसे के साथ ही मिलाकर देना चाहिए।
4–	**कीट-प्रबंधन**	□ धान में पत्ती लपेटक व तना बेधक कीट के नियंत्रण हेतु कार्बाफ्यूरान 3 प्रतिशत 20 किग्रा0 अथवा कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4 प्रतिशत की 20 किग्रा0 मात्रा को 3–5 सेमी0 पानी में बुरकाव करें। हरा फुदका के नियंत्रण हेतु कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से बुरकाव करें। भूरा फुदका के नियंत्रण हेतु यदि सम्भव हो तो खेत से पानी निकाल देना चाहिए व यूरिया की टाप ड्रेसिंग रोक देनी चाहिए। डायनोटेफुरान 0.5 ग्राम प्रति लीटर अथवा पाईमेट्रोजिन 0.6 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।

		□ अरहर में चोटी बेधक कीट के नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 2. 0 लीटर प्रति हे0 800–1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। □ मक्का में फाल आर्मीवर्म के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट कीटनाशी की 4 ग्राम मात्रा प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें अथवा क्लोरंट्रानिलीप्रोल रसायन का 4 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें। □ मक्का/ज्वार/बाजरा में पत्ती लपेटक कीट के नियंत्रण हेतु खेत एवं मेड़ों को घास मुक्त रखना चाहिये एवं मेड़ों की छटाई करना चाहिये। फसल की साप्ताहिक निगरानी करना चाहिये। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.50 लीटर मात्रा का 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करना चाहिये। □ उर्द/मूँग में बालदार गिडार के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहना चाहिए। 5 गंधपाश (फेरोमैन ट्रैप) प्रति हे0 की दर से प्रयोग करना चाहिए। बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिडकाव करना चाहिए। एजाडिरैक्टिन (नीम आयल) 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.5 ली0 प्रति हे0 की दर से 600–700 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करना चाहिए। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 1.25 ली0 प्रति हे0 की दर से 600–700 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करना चाहिए। उर्द/मूँग में पीला मोजैक रोग के वाहक कीट सफेद मक्खी की रोकथाम हेतु फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ब्लिस्टर बीटल के नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफोस एवं साइपरमेथ्रिन के मिश्रण का 1.5 मिली/ली पानी की दर से छिड़काव करें। □ टमाटर, फूलगोभी, मिर्च, शिमला मिर्च, पत्तागोभी, बैगन की नर्सरी में प्रारम्भ में सफेद मक्खी के प्रवेश को रोकने के लिए लो–टनल पॉलीहाउस का प्रयोग करें।पूर्व में रोपित बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	
7.	**वानिकी प्रबंधन**	□ वानिकी पौधशाला / नर्सरी संचालन □ बांदा क्षेत्र में भारी वर्षा हो रही है, इसलिए सलाह दी जाती है कि नर्सरी की जलनिकासी नालियों को साफ रखें, ताकि नर्सरी की क्यारियों में पानी जमा न हो। □ नमी के कारण फफूंदी (डैम्पिंग ऑफ, पत्ती धब्बा) एवं कीटों का प्रकोप बढ़ सकता है। आवश्यकतानुसार उचित फफूंदनाशी/कीटनाशक का छिड़काव करें। □ पौधाला में आद्रपतन या कमरतोड रोग की रोकथाम हेतु कार्बेन्डाजिम (10ग्राम)+मेन्कोजेब(25ग्राम) प्रति लीटर पानी के घोल से रोक के लक्षण दिखते ही सिंचाई करें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय	6. डॉ मयंक दुबे 7. डॉ दिनेश गुप्ता 8. डॉ पंकज कुमार ओझा 9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह 10. डॉ जगन्नाथ पाठक 11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार